SanskritikAur SamajikAnusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 01-04-2023, Accepted: 15-04-2023, Published: 02-05-2023
Volume 4, Issue 1, 2023, Page No. 14-20

विवेकी राय की कहानियों में चित्रित ग्रामीण जीवन

डॉ. अमरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
सहायक आचार्य हिन्दी, एमिटी यूनिवर्सिटी उत्तर प्रदेश, लखनऊ कैंपस, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हमारे सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परस्पर विरोधी मूल्य एक–दूसरे से निरन्तर टकरा–टकरा कर टूट रहे हैं। साथ ही साथ ये समाज के ढाँचे को भी तोड़ रहे हैं। जिन्दगी के ग्राम–जीवन से जुड़ी कहानियों में ऐसे ही चित्र सामने आते हैं, जिनमें मूल्यों के घात–प्रतिघातों को उसके यथार्थ धरातल पर विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है और यह सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी एवं सही भी लगता है। ग्रामीण जीवन के कहानीकार डॉ0 विवेकी राय की कहानियाँ ग्राम जीवन के अनेक सन्दर्भों में रची–बसी है। गाँवों की अनेक समस्याओं को उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। समाज के किसी पक्ष को लिया जाये, चाहे वर्ग संघर्ष हो, चाहे जातीय समीकरण हो, चाहे और कोई पक्ष, सभी का बड़ा ही विश्वसनीय चित्रण कहानियों में देखा जा सकता है।

मूल शब्दः सामाजिक यथार्थ कहानियों कथाकार संवेदनाओं

ग्रामीण जीवन में मनुष्य की स्वार्थवृत्ति के कारण तेजी से परिवर्तन आया है। पहले जो संवेदनात्मक लगाव छोटे–बड़े का आपस में होता था, वह अब धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। विवेकी राय के कहानी संग्रह 'नयी कोयल' की 'मरछिया' में मरछो फुआ का चित्रण कथाकार इसी रूप में किया है। मरछिया के व्यक्तित्व से लेखक ग्राम जीवन की छीजती जा रही मानवीय संवेदनाओं को स्पष्ट उभारा है। कहानी के एक प्रकरण में यह भाव तब और स्पष्ट हो जाता है, जब मरछिया का टकराव मंजू बाबू से होता है। 'मरछिया' को परेशान कर रहे गाँव के बच्चों पर मंजू बाबू बन्दूक तानते हैं, तो मरछिया कूद कर सामने आ जाती है। उसके प्रतिरोध करने पर मंजू बाबू कहते हैं – ''तु तो ग्रामोफोन हो जाती है। बहुत बक–बक मत कर .....।'' ''त हमारा बक–बक करना रोक लेगा, बड़े–बड़े लाट दरोगा हमारी जुबान बन्द नहीं कर सकते। ... . अरे तुमको मैंने गोद में खेलाया है, तुमको चलना सिखाया है। . ..... अब बाबू हो गया, तेजीसी हो गया। रोब उसको दिखाना जो तुम्हारा रियाया होगा, हमारा राम मालिक है।

यथार्थ विवेकी राय की वास्तविक सही और रुचिकर जमीन 'गाँव' है, जिस पर उनकी अधिकतर अच्छी कहानियाँ खड़ी हैं। गाँव सम्बन्धी कहानीकार की विशाल अनुभव सम्पदा की कथात्मक परिणति न केवल व्यापक और बहुआयामी है, अपितु घनीभूत और संवेद्य भी। इनमें गाँव का जीवनमय अपनी खूबियों और खामियों से उभरा है और इस उभार में किसी प्रकार की आपत्तिजनक पक्षधरता या एकांगिकता न होने से ये कहानियाँ गाँव के जीवन की सम्पूर्ण और प्रामाणिक रपट बन गयी हैं। विवेकी राय की अधिकतर अच्छी कहानियों के केन्द्र में कोई न कोई 'विसंगति' है। उन्होंने जिन राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक विसंगतियों को उठाया है, उनमें छोटी जाति और मेहनतकश जनसमुदाय का अमानवीय शोषण और उत्पीड़न, गाँव की आपसी फूट और उसके चलते आत्मीयता, सद्भाव और भाईचारे का उन्मूलन, गाँव के सहज जीवन में कुटिल राजनीति का प्रवेश और उसकी खलनायिका सी भूमिका, दहेज, छूआछूत, तिलक आदि रूढ़ियों का दबाव आदि मुख्य है। गाँव की दुनिया सीधे दो वर्गों में बँटी है। एक ओर मौजमस्ती की दुनिया है और दूसरी ओर मेहनत की दुनिया। पहली दुनिया का सारा यौवन दूसरी दुनिया को निचोड़कर निखारता है। ''विवेकी राय की पूरी और आन्तरिक सहानुभूति मेहनत की दुनिया के साथ है। उन्होंने 'गद्दी पर किसका पैर', 'यह तो घर है प्रेम का' और 'रावण' आदि कहानियों में आर्थिक विषमता, आर्थिक–सामाजिक शोषण और इस शोषण के प्रति सुगबुगाते विद्रोह को रेखांकित करते समय मौज–मस्ती की दुनिया के प्रति अपनी नाराजगी और जुगुप्सा को तनिक भी नहीं छिपाया है।''[1]

विवेकी राय ने ग्रामीण जीवन से गहरा लगाव होने के कारण और गाँव में पले–बढ़े होने के कारण छोटी–छोटी घटनाओं को बड़े ही मार्मिकता के साथ व्यक्त किया है। कहानी की भाषा में गाँव गन्ध की महक रची–बसी है। इनकी कहानियों में जो यथार्थ चित्र सामने उभरता है, वह किसी एक गाँव या क्षेत्र का नहीं जान पड़ता, बल्कि उसे देखकर ऐसा लगता है कि यह भारत वर्ष के सभी गाँवों और उससे जुड़े कोटि–कोटि लोगों का यथार्थ चित्र है। शायद इसी तथ्य की पुष्टि हेतु विष्णु प्रभाकर ने लिखा है कि – ''भारत के असंख्य अविकसित गाँव में अनपढ़ पर सरल प्राण धरती–पुत्रों की ये कहानियाँ सम्पूर्ण चित्र भले ही न प्रस्तुत करती हों पर हैं उसी धरती से जुड़ी हुई। जहाँ टूटन के कगार पर खड़े इन गाँवों की धड़कन इनमें सुनी जा सकती है वहाँ आधुनिकता के अन्तर्विरोधों के टकराहट के स्वर भी मुखर होते प्रतीत होते हैं।''[2] आपकी कहानियों में ग्रामीण जीवन के सभी रूपों और उन पर पड़ने वाले प्रायः सभी तरह के प्रभावों को दर्शाया गया है। इन कहानियों में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन का चित्रण किया गया है।

(क) सामाजिक कहानियाँः सामाजिक जीवन में मूल्यों का आपसी संघर्ष ही विघटन का मुख्य कारण कहा जा सकता है। हमारे सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परस्पर विरोधी मूल्य एक–दूसरे से निरन्तर टकरा–टकरा कर टूट रहे हैं। साथ ही साथ ये समाज के ढाँचे को भी तोड़ रहे हैं। जिन्दगी के ग्राम–जीवन से जुड़ी कहानियों में ऐसे ही चित्र सामने आते हैं, जिनमें मूल्यों के घात–प्रतिघातों को उसके यथार्थ धरातल पर विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है और यह सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी एवं सही भी लगता है। ग्रामीण जीवन के कहानीकार डॉ0 विवेकी राय की कहानियाँ ग्राम जीवन के अनेक सन्दर्भों में रची–बसी है। गाँवों की अनेक समस्याओं को उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। समाज के किसी पक्ष को लिया जाये, चाहे वर्ग संघर्ष हो, चाहे जातीय समीकरण हो, चाहे और कोई पक्ष, सभी का बड़ा ही विश्वसनीय चित्रण कहानियों में देखा जा सकता है। ग्रामीण जीवन में मनुष्य की

स्वार्थवृत्ति के कारण तेजी से परिवर्तन आया है। पहले जो संवेदनात्मक लगाव छोटे–बड़े का आपस में होता था, वह अब धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। विवेकी राय के कहानी संग्रह 'नयी कोयल' की 'मरछिया' में मरछो फुआ का चित्रण कथाकार इसी रूप में किया है। मरछिया के व्यक्तित्व से लेखक ग्राम जीवन की छीजती जा रही मानवीय संवेदनाओं को स्पष्ट उभारा है। कहानी के एक प्रकरण में यह भाव तब और स्पष्ट हो जाता है, जब मरछिया का टकराव मंजू बाबू से होता है। 'मरछिया' को परेशान कर रहे गाँव के बच्चों पर मंजू बाबू बन्दूक तानते हैं, तो मरछिया कूद कर सामने आ जाती है। उसके प्रतिरोध करने पर मंजू बाबू कहते हैं – ''तु तो ग्रामोफोन हो जाती है। बहुत बक–बक मत कर .....।'' ''त हमारा बक–बक करना रोक लेगा, बड़े–बड़े लाट दरोगा हमारी जुबान बन्द नहीं कर सकते। ... . अरे तुमको मैंने गोद में खेलाया है, तुमको चलना सिखाया है। . . .. अब बाबू हो गया, तेजीसी हो गया। रोब उसको दिखाना जो तुम्हारा रियाया होगा, हमारा राम मालिक है। ..... कौन सुख है ... ... कोई पूछने वाला नहीं ..... और टप–टप आँखों से आँसू निकलकर गिरने लगे।''3 उसकी इस स्थिति को देखकर मंजू बाबू घबड़ा जाते हैं और दौड़कर उसके पास जाते हैं। कहते हैं – ''अरे मरछो बुआ। तुम तो दुःख मान गयी। हम सब तुम्हारे लड़के हैं। मंजू बाबू और मरछिया के इस वार्तालाप से लेखक यह दिखाने में सफल हुआ है कि गाँव के गरीब और अमीर कहीं न कहीं अभी भी एक दूसरे से संवेदनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। गाँव के समृद्ध मंजू बाबू का मरछिया के प्रति यह संवेदनात्मक लगाव अपवाद स्वरूप नहीं कहा जा सकता है। हाँ यह संवेदना गाँव के नयी युवा पीढ़ी में धीरे–धीरे कम अवश्य होती जा रही है। बदलती सामाजिक परिस्थितियों के कारण भी ग्रामीण समाज के कुछ लोग अपने द्वन्द्व एवं तनाव को कम नहीं कर सके हैं। 'कालातीत' कहानी संग्रह के कालातीत कहानी में एक पण्डित जी जो पेशे से डाक विभाग में नौकरी करते हैं और वहीं गाँव के एक शर्मा जी से जो पठन–पाठन में गहरी–रूचि रखते हैं, अच्छा सम्बन्ध बनाये हैं। लेकिन शर्मा जी के खुले व्यवहार के बाद भी उनके उच्च अभिजात अहं के कारण एक तनाव सा महसूस करते हैं और उनके आगे खुद को बहुत छोटा महसूस करते हैं। शर्मा जी की पुत्री गौरी से उसका रागात्मक सम्बन्ध होता है और उसके बारे में सोच–सोच कर उसे एक अजीब रोमांच सा अनुभव होता है, लेकिन वह इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर पाते हैं। इस सम्बन्ध के बारे में वह जितना ही सोचते हैं, उतना ही तनाव बढ़ता जाता है। एक बार शर्मा जी से सूचना मिलती है कि गौरी को हिस्टीरिया का दौरा पड़ जाया करता है वह उसे देखने चल देते हैं और वहाँ पहुँचते ही स्थिति सामने आती है, लेकिन गौरी के गिरने से पहले ही वह उसे सम्भाल लेते हैं और विस्तर पर डाल देते हैं। वह अनुभव करते हैं कि ''कोई घाव रिसने लगा और चेतना के पोर–पोर से टीसने लगा। गाँव से वह चला तो वह बहुत उल्लास में, परन्तु उस पोखरे की पहुँच ने उखाड़ दिया। सोचा बीते वर्षो में कितना कुछ बदल गया ? शर्मा जी न रहे। ठीक नहीं जानता कि गौरी का क्या हुआ ? हिस्टीरिया से मुक्ति मिली ? फिर क्या हुआ ? इस तथ्य के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि विगत दिनों की खुशियाँ भी कभी–कभी यादों के रूप में एक अजीब तनाव व टूटन दे जाती है। इसी कारण वह सोचता है कि अब वहाँ जाना बेकार है फिर भी पैर आगे बढ़ जाते हैं। पिछले कुछ वर्षो में ग्रामीण समाज में जो परिवर्तन नारी की स्थिति में दिखायी पड़ता है, वह बहुत ही चिन्तनीय बनता जा रहा है। एक बार समाज में नारियों को शिक्षित किया जा रहा है। उन्हें नौकरियों में जगह दी जा रही है, दूसरी ओर उन्हीं नारियों की शादी के समय लोग न सिर्फ दहेज की माँग करते हैं, बल्कि दहेज के लिए लड़कियों को प्रताड़ित करना आम बात हो गयी है। शादी के समय भी यदि किये गये बादे के मुताबिक किसी चीज की कमी रह जाती है तो वहीं पर लड़की के पिता का तमाशा बनते देर नहीं लगता। ऐसी ही मार्मिक स्थिति का चित्रण अपनी कहानी 'माँग' कहानी संग्रह बेटे की बिक्री में लेखक ने स्पष्ट किया है। गाँव के घुटूर बाबू अपनी लड़की की शादी तय करते हैं, नारद तिवारी के कहने पर 'गहनों पर पानी चढ़वा कर'' नकली गहने तैयार करवाये जाते हैं। लेकिन वहाँ स्थिति बिगड़ जाती है, जब बारात आती है। उस स्थिति का चित्रण लेखक ने बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है – ''सुमंगलों का कार्य शुरू हुआ। सिन्दूरदान की घड़ी आयी। लड़का हाथ में सिन्दूर लिये झुका ही कि उसके पिता की कड़कती आवाज सुनायी पड़ी – ''पहले गहनों की जाँच होगी ?'' सुनार गहना देख रहा था। लड़का हाथ में सिन्दूर लिये संकुचित खड़ा था और लड़की का पिता एकटक अपनी कन्या की माँग देख रहा था, जिसे सिर पर कपड़ा हटाकर नाई ने उघाड़ दिया है।''[4] बढ़ते हुए दहेज रूपी भूख के कारण ही कई शादियाँ होकर भी टूट जाती है और कई परिवारों में द्वेष का कारण बनती हैं। कहीं–कहीं लेखक ने अपनी कहानियों के माध्यम से अत्यन्त दीन एवं करुण चित्र उपस्थित किया है, जो मानव–हृदय को छू लेते हैं। समस्या एक दो की नहीं, कहानी संग्रह–जीवन परिधि में ऐसी एक गरीब मजदूर अबला का चित्रण किया है, जो अपने बच्चों के साथ अत्यन्त दीन–हीन दशा में उन्हें रूखी–सुखी देकर और खुद भूखे पेट सो जाती है, जिसके पास न घर है न कोई आसरा। उसके स्थिति का चित्रण करते हुए श्री राय लिखते हैं – ''निकट से जाकर देखा। मन भर आया। ये सोये हैं, मातृ हृदय के दो टुकड़े। माँ उन्हें और प्रकार से बना–संवार न सकी तो क्या ? झूम–झूमकर पाँव तो दबा रही है। जैसे यही उसके बस की बात हो। ..... गरीब के पन्ने पर मातृत्व के सुनहरे जगमगाते वर्ण, जो भूख की ज्वाला में जल नहीं सके, विवशता की जाँच में बाल बांका नहीं हुआ। यह माँ का हृदय भी किस धातु का बना है। .... कहते हैं नारी अबला है, पर भूल जाते हैं कि वह माँ भी है। विश्व की सबसे रमणीय, किन्तु दुस्साहसों से भरी वस्तु। उसकी अपनी सृष्टि है, अपनी दृष्टि है। दुनिया की नजरों में कीड़े–मकोड़ों से अधिक जो महत्त्व नहीं रखते वे इस दुनिया के लाल हैं। जीवन के ध्रुवतारे हैं।''[5] समाज का एक अंग यह भी है जिसके कल का कुछ पता नहीं है, लेकिन जो अपने हाथों से अपनी सन्तान को बनाने का प्रयास करती है। यह माँ का हृदय है, जो अपने लाख दुःखों को सह कर भी सन्तान को सुख देने का प्रयास करती है। उसे यदि कल की चिन्ता है भी तो अपने लिये नहीं, अपने बच्चों के लिये, जो लेखक के शब्दों में दुनिया के लाल हैं। सामाजिक विसंगतियों का अच्छा चित्रण लेखक की कहानियों में मिलता है। भारतीय समाज में प्राचीन काल से वर्ण व्यवस्था का प्रारूप देखने को मिलता है। यह व्यवस्था अपने स्वरूप एवं गठन में एक हद तक ठीक थी, लेकिन उच्च अभिजात्य वर्ग के कुछ लोग अपने निजी स्वार्थों के साधन हेतु इसे असंतुलित करते हैं। धीरे–धीरे इसकी स्थिति ऐसी होती गयी कि उच्च जाति वर्ग में जन्म लिये हुए लोग छोटी जाति के लोगों को चाहे वे कितने ही सरल, सीधे व सहज क्यों न हों – एक गिरी हुई दृष्टि से देखते हैं, उनसे ऐसे बचके चलते हैं, मानों परछाई भी पड़ जाने से ये अशुद्ध हो जायेंगे। दुर्भाग्य यह रहा कि सामन्ती व्यवस्था जमींदारी–प्रथा के अन्त हो जाने के बाद भी देश में स्वतन्त्रता की लहर चारो ओर व्याप्त हुई, देश स्वतन्त्र हुआ, पर यह मानसिकता अभी भी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुई है। लेखक के कहानी संग्रह 'बेटे की बिक्री' में कहानी 'नदी–नाव संयोग' में एक ऐसा ही चित्रण है, जिसमें एक राह चलते एक व्यक्ति पर दूसरे उच्च वर्ग के सफेदपोश इसलिए द्वेष की भावना रखते हैं कि वह व्यक्ति उनके आगे तेज गति से चल रहा है और उन्हें अदब के साथ आगे बढ़ जाने का रास्ता नहीं दे रहा है। लेखक बिना कारण इस भाव को व्यक्त करता हुआ कहता है –

''अक्सर ऐसे मौके पर न जाने कहाँ से छोटे–बड़े की एक सूक्ष्म भावना आ जाती है। क्यों उसे अपने पीछे देखकर चट रास्ता छोड़ देना चाहिए ? क्यों नहीं बिना किसी तनाव के स्वाभाविक रूप से हमें उसके पीछे–पीछे चलने से हमें हेठी क्यों माननी चाहिए ? इन सबका उत्तर साफ है। इसलिए कि वह छोटा है? क्या इसलिए कि वह मेरी भाँति पूरी पोषाक में नहीं है। या क्या इसलिए कि नीच कही जाने वाली जातियों का एक सदस्य प्रतीत हुआ ?''[6] ग्रामीण सामाजिक परिवेश में कथा–कहानियों का अपना अलग ही महत्त्व होता है। कभी–कभी जो कार्य मनुष्य की सहज बुद्धि से सम्भव नहीं होता, वह कथा–कहानियों को सुनकर हो जाता है। ग्रामीण जीवन अत्यन्त सरल एवं सच्चा होता है। इसलिए ये कहानियाँ उस पर सीधे प्रभाव डालती हैं। ऐसी ही कहानी का प्रभाव लेखक ने अपने कहानी ''बाप मोरे भइले कठबपवा'' कहानी–संग्रह – 'कालातीत' में दिखाया है जिसमें एक शिक्षक के मित्र हैं। उनके दो बच्चे – सुशील और उर्मिला हैं। पत्नी का स्वर्गवास हो गया है और वे पुनः दूसरी शादी करना चाहते हैं। शिक्षक के काफी समझाने–बुझाने पर भी उनका मन नहीं बदलता है और अपने मित्र को लेकर मेले में लड़की देखने चल देते हैं। जहाँ शिक्षक मित्र की शादी के अगुवा को पहचान लेता है कि वह एक ठग है और उससे अपने मित्र को बचाने की तरकीब सोचता है। रात में मेले में एक कहानी 'सनगुड़िया रे सनगुड़िया', 'बाप मोरे भइले कठबपवा रे सनगुड़िया' सुनाया। इस कहानी का उनके ऊपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे तुरन्त शादी का ख्याल छोड़कर मेले में से तुरन्त घर वापस आ जाते हैं। इस कहानी में लेखक ने दिखाया है कि कुछ मार्मिक कथा–कहानियों से कैसे मनुष्य का सहज ही हृदय–परिवर्तन हो जाता है।

(ख) राजनीतिक कहानियाँः गाँव कभी स्वर्ग रहा होगा, इसे सबका मन चाहता होगा, आज तो वहाँ अपनी आपसी फूट, सम्बन्धहीनता और कूटिल राजनीति का बोल–बाला है और गाँव में रहना मुश्किल हो रहा है। आत्मीयता और सद्भाव का क्रमशः ह्रास हुआ है, जिसका एक मुख्य कारण पार्टीबन्दी है। डॉ0 विवेकी राय की कहानियों में राजनीतिक यथार्थ के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। आज के गाँव राजनीति के दायरे से अलग नहीं है, बल्कि राजनीति में उनकी सक्रियता दिन–प्रति–दिन बढ़ती जा रही है। ऐसी स्थिति में एक ग्रामीण जीवन का कहानीकार अपनी रचनाओं में इन तथ्यों से दूर कैसे रह सकता है ? विवेकी राय ऐसे कहानीकार हैं, जिनसे ग्रामीण जीवन का कोई भी पक्ष छूटने नहीं पाया है। भारतीय गाँवों को राजनीति किस प्रकार प्रभावित कर रही है ? गाँव में उनके कैसे कैसे रूप होते हैं तथा गाँव की रूप रेखा और वहाँ के लोगों पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है ? इन सारी बातों को वे अपनी कहानियों में विभिन्न रूप से चित्रित करने का सार्थक प्रयास किये हैं।

राजनीति और गाँवः राजनीति यदि गाँव के वातावरण और वहाँ के लोगों को प्रभावित करती है, तो वहाँ से खुद भी उसके स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिलता है। इसका उदाहरण हम श्री राय के कहानी संग्रह – 'नयी कोयल' में देखते हैं। 'कचहरी', 'कानून', 'चकबन्दी', 'ग्राम सभा का चुनाव', 'अफ्सर शाही', 'नेतागिरी', 'दलबन्दी', 'पुलिस एवं ग्राम जीवन की अराजक युवा पीढ़ी इन्हीं तीनों शक्तियों से प्रेरित और प्रोत्साहित है तथा गाँव का निरन्तर शोषण एवं उत्पीड़न करती आ रही है।''[7] गाँव के बदलते हुए भ्रष्टाचार और गिरते हुए मानव–मूल्यों के लिए लेखक ने जिन तीन शक्तियों की ओर संकेत किया है, वे गरीबी अशिक्षा तथा अशान्ति है। इनके प्रभाव से स्वाधीनता के बाद ऊपर से चिकने दिखने के बावजूद गाँव आन्तरिक रूप से विघटित तथा बिखरते गये हैं। आजादी के बाद भी देश की राजनीति अपने लोगों के हाथों में आ जाने के बाद भी गरीबों और असहायों का कोई नहीं होता। इसमें भी अंग्रेजी राज्य के पण्डे की एक से इक्कीस हो रहे हैं, उनकी पौ–बारह है। गाँव की झोपड़ियाँ जलती हैं तो राजनीतिज्ञों के हाथ सेंकने का मौका–मिलता है। इन भोले–भाले ग्रामीणों के जीवन को ये राजनीतिज्ञ किस तरह प्रभावित करते हैं इसका एक और उदाहरण इसी संग्रह में है – ''अधिकारियों की पैर से हम चलते हैं, अखबारों की आँख से हम देखते हैं और नेताओं की बुद्धि से हम सोचते हैं। जीवन जकड़ गया है, गला फंस गया है।साँस लेना कठिन हो गया है। हाय! हम कितने लाचार हैं।''[8] गाँव के ऊपर वर्तमान राजनीति का कितना प्रभाव पड़ा है इसका चित्रण ऊपर किया जा चुका है। यह राजनेता तथा अधिकारी ग्रामीण जनों को कहाँ से कहाँ ले जा रहे हैं। उनकी बातों का और वादों का क्या फल मिल रहा है। यह किसी भी गाँव का निरीक्षण करने से पता चल जाता है। गाँव और उसकी राजनीति का चित्रण 'गूंगा जहाज' में भी लेखक ने किया है। 'गोरी का गाँव' में राजनीति पर व्यंग्य करते हुए लेखक कहता है – ''आज मैंने सोचा यह गोरी भारत माता है। इसका टीन का चतुर्दिक से पिचका तसला जय प्रकाश नारायण की राजनीति के समान है। यह असली सर्वोदय पाता है, इसकी लोहे की तरह लगने वाली मिट्टी की कड़ाही कांग्रेसी कड़ाही है।''9 कहानी में देश की राजनीतिक स्थिरता पर भी व्यंग्य किया गया है। ''दो थाली में एक टिन की है और एक पीतल की। एक में काम के स्वार्थवादी खाते हैं और एक में नाम के समाजवादी। कलछुल विरोधी पार्टियों के छूँछे नारे परसने का काम करती है।''[10] कहानी में लेखक जिस 'गोरी' को भारत माता सोच रहा है, वह विपन्न ग्राम युवती है जो अपने जीवन के सम्पूर्ण दैन्य को सन्तोष वृत्ति के सहारे व्यतीत कर रही है। किन्तु गाँव के तिकड़मबाज ठाकुर कचहरी सिंह जमींदारी के मालिक स्वामी जी, गाँव के सबसे पड़े किसान पुत्र बसन्त बाबू, सभी को गोरी के कालिख लगे वर्तन अप्रिय हैं, गोरी के इन बर्तनों से किसी की सेहत बिगड़ती है, तो किसी के स्नान के लिए जल गन्दा हो जाता है और किसी के लिए उसके काले बर्तनों का उसके साथ सानिध्य अप्रिय लगता है। उसकी विपन्नता के प्रति किसी के भी मन में सहानुभूति अथवा करुणा का भाव नहीं है। उससे लोगों का जुड़ाव या तो उसके प्रति वितृष्ण के कारण है, या सब कुछ देखकर निरपेक्ष भाव से गुजर जाने का। इसी कारण कहानीकार उसे 'भारतमाता' के प्रतीक के रूप में देखता है, क्योंकि भारतमाता के प्रति भी इस देश के सम्पन्न और दूसरों की अपेक्षा प्रबुद्ध कहे जाने वाले लोगों का

दृष्टिकोण वैसा ही है, जैसा गोरी की चिन्ताओं से सरोकार नहीं है। कोई उसके जीवन के बेहतरी को लेकर चिन्तित नहीं है। सभी केवल यह चाहते हैं कि वह उन लोगों की अनुकूलता को ध्यान में रखकर अपने दैनिक क्रिया–व्यापार को संयोजित करे, तब ठीक है। गाँव के कुछ प्रबुद्ध वर्ग के लोग चुनाव में किस–किस तरह अपना उल्लू सीधा करते हैं इसका स्पष्ट चित्रण डॉ0 विवेकी राय की कहानियों में मिलता है। ''दादा मरने के समय कह गये कि बालकों! वह नेकी न भुला देना। इतना सुनकर वयोवृद्ध पण्डित जी बोले – तो ऐसा करो ! इस समय ये लोग आये हैं तो इन लोगों के कहने पर इस कागज पर अविश्वास प्रस्ताव दे दो और जब मतदान का मौका आये तो अपने दादा के वचन के अनुसार मतदान करने मत जाना। सभापति जी ने कहा – तब मनुष्यता कहाँ रह जायेगी ?''[11] हरि बाबू, पण्डित जी तथा अन्य प्रबुद्ध राजनीतिक लोग सभापति जी को धरमचन्द के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने के लिए तरह–तरह के दबाव देते हैं, लेकिन जब सभापति किसी तरह तैयार नहीं होते तो हरि बाबू जो सभापति के सगे साले हैं कहते हैं कि यदि हम लोगों की बात आप नहीं मानेंगे, तो हम लोग बिना जलपान किये वापस चले जायेंगे। लेकिन सभापति जी का किसी भी तरह न झुकना यह सिद्ध करता है कि ऐसी चाटुकारिता और स्वार्थपूर्ण लोगों के बीच में भी कहीं न कहीं

आदमियत जिन्दा है, जो अपने साथ किये गये लोगों के अच्छे, बुरे कामों को निभाती है। चुनाव, नेता और उसके झूठे वादे ग्रामीणों को क्या देते हैं ? और उनकी सोच पर क्या असर पड़ता है – इन सबका विस्तृत और स्पष्ट चित्रण लेखक ने किया है। गाँव के अशिक्षित लोग, जो नेताओं के बड़े–बड़े वादों और भाषणों में उलझकर अपने कीमती वोट का मूल्य नहीं समझ पाते हैं और यह नेता जो सभा में ग्रामीणों के उत्थान की बात कहते हैं, उसे चुनाव के बाद ही भूल जाते हैं। कहानीकार ने झूठे राजनीतिज्ञों पर व्यंग्य करते हुए कहा है– भाषण समाप्त होने पर गाना होगा। मैंने कहा और उलझ गया, ये गाना सुनकर आये हैं। योजनाओं का इन्हें क्या पता ? स्वराज्य नाम की चीज से शायद इनका परिचय भी नहीं। इन्हें दिखायी तो कुछ नहीं पड़ रहा है, उधर मंच पर सड़कें बन रही हैं, बिजली लग गयी है, बड़े–बड़े बाँध बन गये हैं और अन्न–वस्त्र से जनता निहाल हो गयी है। गाँव में वोट की राजनीति के कारण धीरे–धीरे कैसे अनेक प्रकार के असन्तोष, क्षोभ आदि भावों का उदय होता है– इसका सुन्दर चित्रण लेखक की कहानी 'चुनाव–चक्र' और 'सारे जहाँ से अच्छा' में हुआ है। चुनाव–चक्र कहानी में सब सोचने लगे हैं कि जनता केवल साँचा है, जो छत तैयार होने पर ढा दी जाती है। सभी यह महसूस करने लगे हैं कि कांग्रेस और के राज्य में उनकी दृ ष्टि में क्या फरक है, फरक यही मालूम होता है कि आप लोग जैसे बड़े–बड़े मालिक दास के हार को पवित्र कर दिये, परन्तु इससे पेट नहीं भरेगा। इन कहानियों में गाँव के ऊपर बाहरी राजनीति का प्रभाव तो दिखायी देती ही है, साथ ही साथ गाँव के बड़े लोगों का छोटों के प्रति अन्याय और उन्हें अपने राजनीतिक दाँव–पेंच से लड़ाना और बर्बाद कर देना भी दिखाया गया है। ''जीवन–परिधि'' कहानी संग्रह में 'भूमिधर' कहानी में गाँव के छोटे किसान भदई और गाँव के जमींदार के खुन्दश का वर्णन किया गया है जिसमें चैन सुख से जी रहे भदई और कोदई, दोनों भाइयों पर जमींदार की टेढ़ी नजर पड़ जाती है और अनन्त घर बर्बाद होने के साथ–साथ भदई मर भी जाता है। अपने ऊपर आये दुःखों के क्रम को शुरू करते हुए कहता है – ''एक सबेरे आँख खुली तो भैंस खूँटे पर नहीं देखा। गाँव–घर, खेती–बारी ढूँढ़ मारा, पर पता, न लगा। अभी यह घाव हरा था कि दो बीघा लगा गेहूँ, जो अभी पका नहीं था, खेत में कटा पड़ा मिला। इतने से ही नहीं ग्रह टला ! जमींदार की बारात जाने–वाली थी। उनके घोड़े के साथ लाठी लेकर दौड़ते हुए जाने वाले कसरती जवानों की जरूरत थी। सिर्फ शान के लिए। भैया को भी बुलावा आया। जाकर अर्ज किया – ''सरकार, हौसला टूट गया है। मेरी रोजी का सहारा ही खो गया है। होश ठिकाने नहीं रहता। दूसरों को कह दें। मालिक हैं। एक बुलावे दस आवें। ''इस पर खम्भे में बाँधकर मन की मुराद पूरी की गयी। पन्द्रहवें दिन चोरी में वारण्ट निकला और घर का रहा–सहा पैसा कचहरी के गीदड़ों के पेट में चला गया।''[12] ग्रामीण जीवन पर अपनी गहरी पकड़ के कारण ही कहानीकार गाँव के दो वर्गों का ऐसा साफ और स्पष्ट चित्रण करने में सफल हुआ है। यह वह घटना है, जो हर छोटे बड़े समाज में किसी न किसी रूप में घटित होती रहती है। हर बड़ा आदमी छोटों पर अपना प्रभाव जमाकर रखना चाहता है और यदि वह उसके जरा भी विरूद्ध हुआ तो उसका पतन इसी तरह होता है। बड़ों के कुचक्र में छोटों का पतन एक नियति सा जान पड़ता है, जो हर समय किसी न किसी रूप में दिखायी पड़ता है। वर्षों की पराधीनता के बाद देश आजाद हुआ और उस आजादी में हर छोटे–बड़े लोग अपने स्तर तथा अपनी क्षमता के अनुसार त्याग और बलिदान किये तथा यह सपना लेकर कि आजादी के बाद देश में अपना शासन होगा, अपने लोग होंगे, किसी भी प्रकार कष्ट या परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी, आजादी के बाद प्रजातन्त्र शासन–प्रणाली देश में लागू हुई। पराधीनता के बाद देश पर यह जो शासन–व्यवस्था स्थापित की गयी उसके लिए देश की जनता मानसिक तौर पर न तो तैयार थी और न ही उसमें क्षमता और योग्यता थी कि वह उस व्यवस्था में अपने को ढाल सके अथवा उसके उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सके यह धीरे–धीरे कठिन जान पड़ा। सारी व्यवस्था ढुलमुल होने लगी। किसी भी क्षेत्र में न्यायसंगत कार्य नहीं हुआ और तो और न्याय व्यवस्था भी केवल कहने की चीज हो गयी। जनता को उसके ही राज्य में सही और निष्पक्ष निर्णय समय से नहीं मिल पाता है। ऐसी भी परिस्थितियों का चित्रण विवेकी राय की कहानियों में मिलता है, जो न्याय व्यवस्था की पोल खोलने के लिए काफी है। इसका एक उदाहरण उनके कहानी–संग्रह 'कालातीत' कीःतारीखे' कहानी में मिलता है। गाँव का एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कहता है– ''एक किस्सा सुने हैं ?'' उसने सिर ऊपर उठाया, फिर जोर से हँसकर कहने लगा – ''एक आदमी बहुत दिन बाद वतन पर लौटा तो देखता क्या है कि गाँव उजड़ गया है। लोग उदास हैं। उखड़े–उखड़े बोल रहे हैं, किसी अकाल या महामारी की चपेट में हैं या क्या बात है ? लोगों से पूछा तो मालूम हुआ चकबन्दी आयी है और तारीखें पड़ रही हैं।''[13] लेखक यहाँ यह कहना चाहता है कि हमारे अपने राज्य में भी समय से हमें न्याय नहीं मिलता और उसके लिए भी हमें बेवजह भाग–दौड़ की परेशानी और समय बरबाद करना पड़ता है। देश की राजनीति भ्रष्ट लोगों के हाथ में पड़ने से देश का मार्ग अवरूद्ध हुआ है। अधिकारी खुद कार्य करना नहीं चाहते। वे विकास के धन को मिल–बाँट कर खा जाते हैं।

विभिन्न विषयों पर आधारित कहानियाँ

आर्थिक कहानियाँः विवेकी राय ने ग्रामीण जीवन के अन्य रचनाकारों की तरह अपनी कहानियों में गाँव की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं व्यावहारिक स्थिति का बड़ी गहराई के साथ चित्रित किया है। यदि हम कहें कि इसी समस्या को उन्होंने अन्य समस्याओं को केन्द्र बिन्दु माना है तो अत्युक्ति न होगी। रचनाकार के खुद ग्रामीण जीवन से जुड़ा होने के कारण उसका चित्रण अधिक पारदर्शी और विश्वसनीय लगता है। आजादी के बाद ग्राम–पंचायतों और विकास योजनाओं के माध्यम से कुछ आशाएँ जगी जरूर थी, लेकिन वे भी धीरे–धीरे सफेद हाथी साबित हुई। इसके लिए लोगों की स्वार्थ–वृत्ति को कारण रूप में माना जा सकता है। अपनी कहानियों में आर्थिक स्थिति का चित्रण वे शुरू से ही करते आये हैं। लेखक ने पहले कहानी संग्रह – 'जीवन–परिधि' में गरीबी के यथार्थ रूप का चित्रण किया है। 'समस्या एक दो की नहीं' कहानी में एक ऐसी विधवा का चित्रण है जो अपने एक बेटे को छोड़ दो, दो बच्चों के साथ लेकर मजदूरी करने और बच्चों का पेट भरने के लिए गाँव छोड़कर चल देती है, जिसके पास न रहने के लिए घर है, न तन ढकने के लिए वस्त्र। उसकी स्थिति के बारे में पूछने पर वह खुद बताती है – ''अब घर–द्वार, धन–दौलत जो समझिए बाबू ये ही दो लाल हैं। इन्हीं के लिए जीती हूँ। जहाँ पेट भरे, वही घर है। इसी गाँव में तो ये दिन पर दो रोटी मिली है। कुछ खिलाया और थोड़ी यह क्या रक्खी है।''[14] यह उस औरत की कहानी है जिसका पति मर गया है, मकान गिर गया है और पास–पड़ोस के लोगों के होते हुए भी वह बच्चों को लेकर भीख माँगने के लिए विवश है। यह गरीबी और विवशता भरा चित्रण किसी एक की नहीं है यह अनेक भारतीयों की नियति है, जो अपने देश में रहकर भी दो मुट्ठी अन्न के लिए तरस रहे हैं। गरीबी का चित्रण 'कठनहीं' कहानी 'नयी–कोयल' में भी लेखक ने बड़े मार्मिक ढंग से किया है। इस कहानी में लेखक ने कठनहीं को गरीबी का प्रतीक बताया है। आज अन्य देशों में कालपात्र के अन्दर कला संस्कृति की अनेकानेक सामग्री संचित की जा रही है, जबकि भारतीय कठनहीं को सजोकर देख रहे हैं। 'कठनहीं' के माध्यम

से लेखक ने गरीबी का जो चित्र खींचा है, वह अपने प्रभाव में विशिष्ट है। ''यह काठ जाति जूता और जूता जाति का भैंसा किस प्रकार 'कठनहीं' अर्थात् काठ की पनही से यह 'कठनहीं' हो गया अथवा नहीं का अर्थ 'नथा हुआ' भी होता है। अर्थात् ऐसा काठ जिसे नाथ दिया गया हो और इस प्रकार वह पदत्राण स्थानापन्न हो गया। खड़ाऊँ नथा हुआ नहीं होता है क्योंकि वह ब्राह्मण है और कठनहीं उसकी तुलना में शूद्र है।''[15] इस कहानी में कठनहीं शूद्र या निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। जिस तरह गाँवों का निम्न वर्ग निरन्तर परिश्रम करते हुए भी दिन पर दिन गरीब होता जा रहा है, उसी प्रकार कठनहीं दिन–प्रतिदिन चलते हुए घिसती जा रही है। लेखक का यह प्रतीक–चयन उसकी ग्रामीण जीवन में गहरी पैठ का द्योतक है। ऋण की समस्या हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द के उपन्यासों और कहानियों में देखने को मिलती है। विवेकी राय ने भी भारतीय किसान और मजदूर को ऋण किस तरह प्रभावित करता है, वे कैसे मजबूर होकर ऋण लेते हैं और जीवन पर्यन्त उसे चुकाते दृ चुकाते मर जाते हैं पर समाप्त नहीं होता और वही वसीयत स्वरूप अपने वारिस के लिए छोड़ जाते हैं। श्री राय ने ऋण की समस्या का चित्रण अपनी कहानी 'घण्टा', 'गूँगा–जहाज' में किया है। कहानी का नायक महेसर अपने अन्तिम समय में बेटे को पास बुलाकर कहता है– ''मेरे सारे जीवन की कमाई, चारपाई पर मेरे सिरहाने है। ... . बेटा ! कुल की आबरू पर आँच न आये। साहु ..... भगवान् ... . है। उससे ..... उऋण ..... होना।'' महेसर की आँखें सदा के लिए मुँद गयीं। चारपाई पर सिरहाने दस हजार के लगभग ऋण के ब्यौरे वाला कागज मिला।''16 यह कहानी महेसर की नहीं है, बल्कि उसके माध्यम से लेखक ने एक बहुत बड़े वर्ग की समस्या को उजागर किया है। यह वर्ग अपने में अतीत–जीवी होता है। इसके आस–पास के लोग भी उसे ऐसा जीवन जीने पर विवश कर देते हैं, जो ऋण चुकाते–चुकाते ही जीवन बिता देता है पर मुक्ति नहीं मिलती। इस ऋण की समस्या को 'जीवन–परिधि' के 'उत्तराधिकार' कहानी में भी उठाया गया है, जिसमें बूढ़े द्वारा कर्ज लेने पर ब्याज बढ़ता जाता है और उसका मकान नीलाम हो जाता है। लेखक कहता है – ''जिस समय सेठ के साथ ऋण में मकान के नीलाम की नोटिस लेकर चपरासी पहुँचा, उस समय मकान–मालिक सदा के लिए सो गया था और उसका बेटा उत्तराधिकार में मिले चार हजार कर्जे के हिसाब को, जो मृत पिता के सिरहाने से मिला था, भीगी आँखों से देख रहा था।''[17] किसान और मजदूर की प्रमुख समस्या अर्थ की है, जिसके लिए वह ऋण लेता है पर उससे उऋण होने में उसकी पीढ़ियाँ गल जाती हैं। फिर भी बिना खेत, मकान नीलाम हुए मुक्ति नहीं पाता है। अपनी कहानियों में लेखक ने यह दिखाया है कि किसान एवं मजदूर वर्ग की बिगड़ी स्थिति का एक बहुत बड़ा कारण बेकारी है। बेकारी में शिक्षित व अशिक्षित दोनों वर्ग पिस रहे हैं। गरीब किसान एवं मजदूर अपने बच्चों की शिक्षा का भार उठाने के लिए अथक श्रम करता है। वह अपना सर्वस्व दाँव पर लगा देता है किन्तु वही बच्चे जब ऊँची डिग्रियाँ लेकर नौकरी के लिए चक्कर काटते हैं, तो सिर्फ निराशा हाथ लगती है। ऐसी शिक्षा पर व्यंग्य करते हुए जूता पॉलिश करने वाला बालक कहता है – ''बेशक उसने अँगूठा दिखा दिया। उन बड़ी–बड़ी यूनिवर्सिटियों को जहाँ से गाढ़ी कमाई खरच करके और भारी–भरकम डिग्रियों को लेकर अहंकार में बेकार लोग निकल रहे हैं ..... ज्ञान–विज्ञान और काव्य कला से पूर्ण उन मूल्यवान् पाठ्य–पुस्तकों को जिनके भीतर से अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, अमानवता और देशद्रोही आदि के दैत्य उपट रहे हैं।''[18] इस शिक्षा और डिग्री से क्या हासिल हो रहा है व्यक्ति को ? इससे तो खुश वह बालक है, जो सुबह से तेरह जोड़ी पॉलिश करके दो–चार रूपये कमा चुका है और अपनी मेहनत से खुश है। वे शिक्षित युवक जो छोटा काम नहीं कर सकते और योग्यता के अनुसार नौकरी मिल नहीं रही है, वे ही समाज के अवांछनीय तत्व के रूप में उभर रहे हैं और देश की राजनीति व विकास को गलत दिशा दे रहे हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् तेजी से धन कमाने की प्रवृत्ति ने आर्थिक भ्रष्टाचार को जन्म दिया है, जिसमें एक ओर घूस लेने वाला अपराधी है, दूसरी ओर रिश्वत देने वाला भी। कहीं–कहीं ऐसे चरित्र भी सामने आते हैं, जो रिश्वत को ठुकरा कर पेश करने वाले को ही दुत्कार दिया है। लेकिन ऐसी मिशाल कम देखने को मिलती है। इसी तरह का एक चरित्र 'राजेन' है, जो विवेकी राय की कहानी 'काजल को कोठरी में', 'चित्रकूट के घाट पर' पर उपस्थित है। भ्रष्टाचार में लिप्त सेठ द्वारा घूस देने पर कहता है – ''किसी दिन–हीन बेवस के लिए कानी कौड़ी न निकालने वाले सेठ जी, आपने मेरे बाल–बच्चों पर रहम कर, मेरे नौकरी पेशे पर पसीज कर तथा मेरे दुःखों को खरीदने के लिए जो आपने सहज में ही पाँच हजार–रूपये न्यौछावर कर दिया उसके लिए आपको धन्यवाद ! अब आपका हुक्म है कि इसे मैं आपको वापस न करूँ ..... सेठ जी, मेरे और मेरे परिवार के लिए भगवान् हैं। आपने चालबाजी और तिकड़म से जिन गरीबों को गला काटकर यह पैसा पैदा किया है, उन्हीं के पास यह रूपया भेजकर आपकी बात रख लेता हूँ ..... लीजिए, बाढ़–पीड़ित सहायता की यह पाँच हजार की रसीद। भगवान् आपको सुमार्ग दिखावे।''[19] लेकिन हमारे देश में इस तरह के कितने राजेन हैं, जो घूस के पैसे को लेकर भी नहीं लेते। जो मौका मिलते ही अपनी ईमानदारी नहीं बेच देते। जो ऐसे सेठों और ठेकेदारों के लिए करोड़ों के साथ बेईमानी नहीं करते और करोड़ों का हक नहीं मारते। यह एक ज्वलन्त प्रश्न अभी निरुत्तरित रह जाता है जिसका कारण आर्थिक होड़ को बढ़ावा देता भ्रष्टाचार है। आजादी के बाद देश की गरीबी दूर करने के लिए अनेक प्रकार की योजनाएँ बनायी गयी। अपने उद्देश्य में कुछ हद तक वे सफल भी रही लेकिन उनका सही ढंग से क्रियान्वयन नहीं हो सका। वे योजनाएँ जिस उद्देश्य से बनी उसे पूरा न कर सकीं। ये योजनाएँ संसद में पास होती है और गाँव तक आते आते समाप्त हो जाती हैं या पहुँच भी पाती हैं तो नाम–मात्र को। इन योजनाओं के द्वारा हुए विकास और उनकी यथार्थ स्थिति पर व्यंग्य करते हुए लेखक ने अपनी कहानी 'सिरफल का शर्बत' कहानी संग्रह 'चित्रकूट के घट पर' में किया है। कहानी में बिहारी बाबू और दुःखी भाई कुछ बच्चों के साथ सिरफल का शर्बत पीने बैठे हैं पर चीनी नहीं है, दुःखी भाई के पूछने पर बिहारी बाबू कहते हैं कि – ''धीरज रखो। चीनी का इन्तजाम हो रहा है। थोड़ी चीनी की जरूरत होती तब तो ब्लैक बाजार में हिसाब हो जाता, परन्तु इसमें लगेगी काफी चीनी। सो, एक अप्लीकेशन लिखा गया है। वह ग्राम सभापति के यहाँ आदमी लेकर गया है। वहाँ से कराकर वह सस्ते गल्ले की दुकान पर जायेगी और .....।'' ''मगर दुकान तो कभी खुलती ही नहीं' ऐं ! क्या कह रहे हो दुःखी भाई, गल्ला मात्र चलता तो जरूर है, पर हो क्या जाता है ? आसमान से गिरकर खजूर पर अटक जाता है। जैसे विकास दिल्ली से चलकर ब्लॉक पर फँस जाता है। ..... लेकिन उस सस्ते गल्ले की दुकान की चीनी के भरोसे शर्बत यज्ञ की पूर्णाहुति होना सम्भव नहीं।''20 शर्बत यज्ञ की पूर्णाहुति के द्वारा लेखक यह बताना चाहता है कि इन योजनाओं का विकास इसी तरह गरीब ग्रामीणों तक पहुँचता है। इसी संग्रह की कहानी 'ब्रह्म बिहार' में लेखक आजादी के बाद गाँव में हुए विकास, सड़क–निर्माण, नाली व्यवस्था, प्रकाश आदि के ऊपर व्यंग्य करता है और कहता है कि ये गाँव के लोग टैक्स, लगान, चन्दा, वोट आदि जो देते हैं मानो सब उसी का यह परिणाम है। गाँव की स्थिति का चित्रण करता हुआ रचनाकार कहता है – ''..... गाँव के बाहर बरसात में निकलने का कोई मार्ग नहीं ..... पैदल जूता सिर पर रखकर, पसीने से लथपथ, उसकी बदबू में गुम–सुम नीचे घुटने पर कीचड़, ऊपर

से माहुर घाम, गड्ढे, कांटे, कीड़े–सड़न, गन्दगी, छपका, छटका, ऊँच–खाल, खूँटी और कपड़ों पर दाग–धब्बे, कई–कई कोस तक, जैसे यहाँ बाढ़, बरसात और कीचड़ गन्दगी की सरकार है। कर, टैक्स, लगान, चन्दा और वोट थे गाँव वाले उसी को देते हैं। वही दल–बल के साथ छायी है। . .....अन्धकार में धँसा, कीचड़ में फँसा, चारो ओर से कटा, नरक कुण्ड की तरह, गाँव आज भी गन्दगी में कैद है।''21 आजादी के बाद भी जो उन्नति हुई है, उसका कितना लाभ भारतीय लोगों या कहें कि ग्रामीण जनसंख्या को मिला है, उसका सच्चा ब्यौरा दे रही है ये पंक्तियाँ। गाँव जहाँ तब थे, कुछ मायने में अब भी वहीं हैं, उन्नति और विकास सिर्फ कागजों में अधिक हुआ है, धरती पर कम। अपने कथा साहित्त्य में लेखक ने वैज्ञानिक उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला है। आजादी के बाद मशीनीकरण की प्रक्रिया का तेजी से विकास हुआ है। 'नयी कोयल' कहानी संग्रह 'नयी कोयल' में कहानीकार मानव–जीवन को सुविधा प्रदान करने वाली इस मशीनीकरण की प्रक्रिया का स्वागत किया है। वह देश में बढ़ती ट्रेन, मोटर, बस, आटा–चक्की, पम्पसेट आदि को विकास मार्ग के प्रगति का प्रतीक मानता है। लेकिन इस मशीनीकरण का जो मानव जीवन पर हावी होती प्रक्रिया है, उसके प्रति लेखक क्षोभ व्यक्त करता है। वह आटा–चक्की की आवाज को 'नयी–कोयल' की आवाज मानता है, किन्तु जब इसी चक्की के कारण ग्रामीण लोगों की सहज सक्रियताएं प्रभावित होने लगती है तो कहानीकार को गहरा क्षोभ होने लगता है। वह कहता है – ''गली–गली चर्चा है। चूल्हे–चूल्हे से आवाज आ रही है। चौका–चौका तड़प रहा है। अरे, इस मिल की जड़ें कितनी गहरी और कितनी प्रसरित हैं। यह लोहे की मामूली मशीन, टीन से छायी छोटी मिल मामूली आटा की चक्की जन–जीवन को कितना प्रभावित किये हुए हैं।''22 वैज्ञानिक सुविधाओं और यन्त्रीकरण से गाँवों की स्थिति में व्यापक परिवर्तन हुआ है। ट्रैक्टर, थ्रेसर, पम्पसेट, ट्यूबेल और अब फसल की कटाई मढ़ाई हेतु 'कम्पाईन' आदि मशीनों से जहाँ कृषि कार्य में सुविधा हुई है, वहीं गाँवों की प्राकृतिक सुन्दरता नष्ट होती गयी। जन–जीवन संकुचित होता गया, संवेदनाएं मरती गयीं। मशीनीकरण के प्रभाव के कारण ही जिन्दगी इतनी व्यस्त होती गयी कि लोगों का दायरा संवेदना के स्तर पर सीमित होता गया। इसका सबसे अधिक क्षोभ पुरानी पीढ़ी को है, जो टूटते हुए मानव–मूल्यों को देख रही हैं।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक कहानियाँः ग्रामीण जीवन में धर्म एवं संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन समय से लेकर आधुनिक काल तक की ढेर सारी मान्यताएं इसी धर्म पर टिकी होती थीं। धर्म और संस्कृति में समय–समय पर यदा–कदा परिवर्तन भी परिलक्षित होता है पर आजादी के बाद पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति ने इस पर गहरा प्रभाव डाला है। ग्रामीण धर्म आज तेजी से बदल रहा है। एक तरह से कहें तो धर्म का पर्यवसान हो रहा है। धर्म की मूल सत्ता पर विज्ञान अपना अधिकार जमाता जा रहा है। बदलते हुए सामाजिक मूल्य के कारण धार्मिक कट्टरता कम हुई। गाँवों में भी धर्म के बन्धन शिथिल पड़ रहे हैं। ग्रामीण जीवन के रचनाकारों ने अपने कथा–साहित्य में विभिन्न प्रकार से इस धर्म के बदलते पहलुओं को चित्रित किया है। डॉ0 राय ने अपने उपन्यासों के साथ–साथ कहानियों में धर्म एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों का चित्रण किया है। भारतीय धर्म में देवी–देवताओं और तीर्थों का बड़ा मूल्य है। इनमें गंगा, यमुना और अन्य तीर्थों एवं नदियों की महत्ता बतायी गयी है। गंगा नदी को भारतीय नदी नहीं 'गंगा मैया' सम्बोधन देते हैं, लेकिन कुछ क्षेत्रों में धीरे–धीरे विज्ञान की प्रगति से इन मान्यताओं पर भी प्रश्नचिन्ह लग रहा है। इस पर विज्ञान के प्रभाव का चित्रण करते हुए लेखक अपनी कहानी 'अँचल में दीप छिपाए' कहानी संग्रह 'चित्रकूट के घाट पर' में बता रहा है कि इन मान्यताओं का कैसे–कैसे ह्रास हो रहा है। ''..... ऐसा नहीं होगा। माना कि गाँव घर में अब लट्टू बल्ब जलेगा। पर गंगा मैया को तो लट्टू नहीं चढ़ाया जा सकता ? ठाकुर जी की आरती लट्टू से कैसे होगी ? क्या पता तब तक गंगा रहे या न रहे और ठाकुर जी ने तो विस्तर गोल कर लिया। ऐसा प्रलय हो जायेगा ? बाहर नहीं, भीतर मन में। देखो भाई ! इस प्रकार ग्राम मन को तहस–नहस मत करो। उसमें बड़ी मिठास और शान्ति है। उसमें सिधाई और सरलता है। उसकी टहनी पर फूल खिलने दो। उसकी जड़ में कीड़े मत लगने दो। उस ग्राम मन की देहली पर बिजली का लट्टू नहीं, सनेह भरा दीपक जलने दो।''[23] ठाकुर जी विस्तर गोल कर रहे हैं – ऐसा कहकर लेखक यह संकेत दे रहा है कि जिस गंगा को लोग 'माँ' समझते थे, उसकी पूजा करते थे, जल में स्नान करके एवं पीकर लोग पवित्र होते थे, उसी गंगा में अब शहरों का कूड़ा–करकट बहाया जा रहा है। सारी धार्मिक भावना व पवित्रता नष्ट होती जा रही है। 'समाजवादी सुबह में एक दिन कहानी संग्रह 'कालातीत' कहानी में लेखक गाँव में पीपल, गूलर आदि वृक्षों की खत्म होती मान्यताओं पर तीखा व्यंग्य किया है और दिन–प्रतिदिन इन नष्ट हो रहे वृक्षों पर गहरा क्षोभ व्यक्त किया है। इसे लेखक व्यंग्य में लोगों की गहरी धार्मिक रुझान का दर्जा देता है – ''अब लोग लगता है पहले से अधिक धार्मिक हो गये हैं और इसलिए कोई गूलर का पेड़ नहीं लगाता। देहात भर में अब यही एक पुराना पेड़ रह गया है। पुराने कट गये, नये लगते नहीं। कहा जाता है कि यदि आप स्नान करके आ रहे हैं और आप के हाथ में जल है, तो वह गूलर के पेड़ की छाया पड़ते ही अपवित्र हो जायेगा। तब इसे कौन लगाये।''24 नीम, गूलर, पीपल, बरगद आदि वृक्षों का संरक्षण इसलिए अधिक होता था कि उनके प्रति धार्मिक मान्यताएँ टूट रही हैं, इनका क्षरण तेजी से हो रहा है। नयी पीढ़ी का विश्वास इन सब बातों से उठ रहा है। इसलिए ये मान्यताएँ और तेजी से बदल रही है। गाँव की जो अपनी संस्कृति थी, वह धीरे–धीरे बदलती गयी। पहले गाँव में मनोरंजन के लिए नाच, बिरहा, फाग और रामलीला होते थे। इसमें रामलीला मनोरंजन के साथ–साथ धर्म से भी जुड़ा था। धीरे–धीरे इनकी जगह गाँव में टी0वी0, लाउडस्पीकर और विडियो हाल ने ले लिया। गाँव में बरसात बीतते रामलीला शुरू हो जाती थी। लोग इकट्ठे होकर भजन–आरती का आनन्द लेते थे। साथ ही मानस के दोहे चौपाइयों का अर्थ भी सुनते थे। कभी–कभी रामलीला में असावधानीवश या लापरवाही से विनाश–लीला भी शुरू हो जाती थी, जिसका चित्रण कहानीकार ने अपनी कहानी 'रामलीला' कहानी संग्रह 'गूंगा जहाज' में किया है। लेखक इसमें गोबरहा तथा खुराव गाँव के पास होने वाली रामलीला का तथा वहाँ के मठों में व्याप्त दुष्प्रभाव एवं घटने वाली घटनाओं का चित्रण निम्न शब्दों में किया है– ''महंत जी दूनी ताकत से बजरंग बली की जय बोलकर उछल पड़े। आगे भूसे की बखार वाली झाही थी, लुकाठ के स्पर्श से वह आकाश चुमने लगी। बरामदे के पास रखे पुआल के बोझ धधक उठे। बरामदे की आग और दो जगह फन फैलाने लगी, वह उत्तर का छाजा बारूद हो गया। आनन–फानन में आग चारो ओर फैल गयी।''[25] यहाँ लेखक यह बता रहा है कि गांजे के नशे में धुत् महंत जिसे लोग आदर व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, किस तरह का सत्यानाशी है। लोग रामलीला देखने कितनी श्रद्धा भाव से आते हैं और लीला देखकर लौटते हैं। इसी तरह 'आप लोग कौन हैं' में लेखक ग्राम जीवन से जुड़े सरल लोकगीतों के प्रभाव का वर्णन किया है। इन गीतों में इतनी शक्ति होती है कि वे राह–चलते लोगों तक को आकर्षित कर लेती है। ऐसी ही एक घटना का चित्र लेखक करते हुए बता रहा है कि बलिया से ददरी का मेला देखकर लौट रहा है और साथ में मित्र गुप्ता जी, शर्मा जी हैं। रास्ते में लोकगीत की धुन सुनकर कहते हैं– ''सचमुच बहुत सुखद समवेत गायन चल रहा है। ज्यों–ज्यों हम लोग पास आते जा रहे हैं, त्यों–त्यों झंकार के बीच की शब्दावली

स्पष्ट होती जा रही थी। वे गा रहे थे – ''ध्वनि–लीला गोपीनाथ, वैद बनि आये।'' स्वरों के उतार–चढ़ाव के बीच अजीब उल्लास फिर श्रीकृष्ण की वह पुरानी लीला गोपियों को छलने के लिए बैद बनकर आये हैं।''[26] ग्रामीण जीवन के इन लोक–गीतों में कितनी कशिश है ? कितना आकर्षण है ? यह इस बात से ज्ञात होता है कि ये राह चलते को भी खींच लेते हैं। कभी–कभी नयी चीजों के आने पर, उनके बारे में सही जानकारी न होने पर लोगों के बीच वे अपनी स्थिति और उपयोग का प्रभाव सही अर्थों में नहीं दे पाती हैं। 'गपड़ चौथ' कहानी जो कहानी संग्रह 'चित्रकूट के घाट पर' में लेटर बाक्स जो गाँव में पहली बार आया है – का उपयोग नये पीढ़ी के लोग तो समझ रहे हैं, पर पुरानी पीढ़ी के लोग उसे किसी देव–शक्ति से कम नहीं मानते हैं – ''गाँव के बुजुर्ग घुरदिन बाबा देखकर पूछते हैं 'ई का टँग गया रे भाई ?' . ..... 'ई डाकखाना का लेटर बाक्स है।' द्वारका उत्तर देता है – आगे पूछने पर बताता है कि कलकत्ता चिट्ठी भेजना है, तो इसी में डालेगें। 'हाँ बाबा।' बम्बई, दिल्ली भेजना हो तो इसी 'मूका' में चिट्ठी डालेगें ? ..... हाँ बाबा, इसी झरोखे जैसे कटे मूके में। 'ऐसी अद्‌भुत चीज को किसने भेजा है बबुआ जी ?'' 'अंगरेजी राज ने, कम्पनी ने' अब क्या था ? सोटा, धोती फेंककर बाबा लेटर बाक्स के आगे लेट गये और उठे तो हाथ जोड़कर बोले – ''जैसी प्रतापी काली माई'' जैसी महिमा वाली सती माई, वैसी ही तु है मूका माई। तु धन्य हो और धन्य है वह कोम्पंन (कम्पनी) जिसने तुमको यहाँ भेजा।''[27] पुराने लोगों के विचार एवं देवी–देवताओं के प्रति श्रद्धा तथा उनके महिमा का चित्रण किया गया है। जिसमें घुरदिन बाबा लेटर बाक्स को भी देवी से कम नहीं समझते हैं। क्योंकि उनकी सोच के अनुसार वह भी मनोवांछित जगह पर पत्र को पहुँचा देती है। वह इसकी व्यवस्था को नहीं समझ पाने के कारण इसे धर्म से जोड़ते हैं। इस तथ्य को स्पष्ट करके लेखक भारतीय धर्म और उसमें व्याप्त व्यापक आस्था का परिचय दिया है। साथ ही भारतीयों के सहज ह्रदय का भी। इस तरह हम देखते हैं कि लेखक की कहानियों में मानव–जीवन से जुड़े सभी प्रकार के भाव एवं चित्रों को उभाड़ा गया है। चाहे वे सामाजिक आर्थिक हो या राजनीतिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक ग्राम जीवन से जुड़े ये चित्र इन कहानियों को भरपूर रंग देने में सहायक हुए हैं। लेखक के सामने दोनों तरह के गाँव हैं। स्वतन्त्रतापूर्व के गाँव स्मृति रूप में और आज बदलते हुए गाँव प्रत्यक्ष रूप में, दोनों पर एक साथ निगाह डालते हुए लेखक ने दोनों के अन्तर्विरोधों का जो यथार्थ चित्र खींचा है और समय–समय पर अपना जो क्षोभ, आक्रोश आदि कहीं व्यंग्य रूप में, कहीं सीधे व्यक्त किया है, वह उसके कहानियों को और सजीव बना देता है।

संदर्भ सूची

1. विवेकी राय की कहानियाँः डॉ0 वेद प्रकाश अमिताभ, पृष्ठ 175
2. कहानियों में ग्राम्य गन्ध की पहचानः विष्णु प्रभाकर, पृष्ठ 173
3. मरछियाः कहानी संग्रहः नयी कोयलः विवेकी राय, पृष्ठ 5
4. मांगः कहानी संग्रहः बेटे की बिक्रीः विवेकी राय, पृष्ठ 77
5. समस्याः एक दो की नहींः कहानी संग्रहः जीवन परिधिः विवेकी राय, पृष्ठ 15–16
6. नदी–नाव संयोगः कहानी संग्रहः बेटे की बिक्रीः विवेकी राय, पृष्ठ 54
7. तीन प्रणम्य देवियाँः कहानी संग्रहः नयी कोयलः विवेकी राय, पृष्ठ 22
8. विवेकी राय, 'नयी कोयल–कौन अन्धा कौन लाचार', पृष्ठ 63
9. गोरी का गाँवः कहानी संग्रहः गूंगा जहाजः डॉ0 विवेकी राय, पृष्ठ 47
10. गोरी का गाँवः कहानी संग्रहः गूंगा जहाजः डॉ0 विवेकी राय, पृष्ठ 47
11. 'बेटे की बिक्री' अवमूल्यन के इर्द–गिर्द नये गाँवों के नये चित्र, डॉ0 सियाराम शरण प्रसाद, पृष्ठ67
12. भूमिधरः कहानी संग्रहः जीवन परिधिः विवेकी राय, पृष्ठ 61
13. तारीखेंः कहानी संग्रहः कालातीतः विवेकी राय, पृष्ठ 19
14. समस्याः एक दो की नहींः कहानी संग्रहः जीवन परिधिः विवेकी राय, पृष्ठ 18
15. कठनहीः कहानी संग्रहः नयी कोयलः विवेकी राय, पृ0 159
16. घण्टाः कहानी संग्रहः गूंगा जहाजः विवेकी राय, पृष्ठ 56
17. उत्तराधिकारः कहानी संग्रहः जीवन परिधिः विवेकी राय, पृष्ठ 69
18. पालिशः कहानी संग्रहः चित्रकूट के घाट परः विवेकी राय, पृष्ठ 21
19. काजल की कोठरी मेंः कहानी संग्रहः चित्रकूट के घाट परः विवेकी राय, पृष्ठ 109
20. सिरफल का शर्बतः कहानी संग्रहः चित्रकूट के घाट पर, विवेकी राय, पृष्ठ 79–80
21. ब्रह्मविहारः कहानी संग्रहः चित्रकूट के घाट परः विवेकी राय, पृष्ठ 88
22. नयी कोयलः कहानी संग्रहः नयी कोयलः विवेकी राय, पृष्ठ 113
23. अंचल में दीप छिपायेः कहानी संग्रहः चित्रकूट के घाट परः विवेकी राय, पृष्ठ 57–58
24. समाजवादी सुबह में एक दिनः कहानी संग्रहः कालातीतः विवेकी राय, पृष्ठ 51
25. रामलीलाः कहानी संग्रहः गूँगा जहाजः विवेकी राय, पृष्ठ 6
26. आप लोग कौन हैंः कहानी संग्रहः कालातीतः विवेकी राय, पृष्ठ 35
27. गपड़ चौथः कहानी संग्रहः चित्रकूट के घाट परः विवेकी राय, पृष्ठ 75